International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.9 No.5 May – June 2022

रत्नकुमार सांभारीया व्यक्तित्व एवं स्त्री दृष्टिकोन

प्रा.डॉ. गायके एम.एम.
हिंदी विभाग अध्यक्षए राजर्षी शाहू महाविद्यालय परभणी.४३१४०१
Corresponding Author- प्रा.डॉ. गायके एम.एम.
Email- munjajigayake@gmail.com

व्यक्तित्व एवं परिचय

दलित साहित्यकार के रूप में रत्नकुमार सांभारिया हिंदी साहित्य में उभरकर आते हुऐ दिखाई देते है। दलित साहित्यिक आंदोलन के प्रमुख साथी के रूप में हमे दिखाई देते है। रत्नकुमार सांभारिया का जन्म ६ जनवरी १९५६ में हरियाना राज्य के गाव भाडावास, जिला रेवाडी में हुआ है। प्रारंभिक शिक्षा हरियाना में करणे के बाद नौकरी करने हेतु राजस्थान में सद्यस्थिती में स्थाई हुए है। रत्नकुमार सांभारीया स्वत: दलित होने के कारण दलितों के प्रति सवर्ण समाज की प्रताडना स्वानुभूती के कारण उनके साहित्य में वास्तविकता और यथार्थता स्पष्ट रूप में दिखाई देती है। दलित समाज पर किये गये आत्याचार और दलित स्त्री— पुरूषों का शोषन और संघर्ष को नवचेतना देने का कार्य उनका साहित्य करता है। दलित समाज की स्त्री तथा पुरूष का जीवन दर्शन करता हुऐ सवर्ण समाज व्यवस्था को चुनौती देता हुआ दिखाकर, पराजय होने के बावजुद भी परास्त न होकर विजय प्राप्ती तक संघर्ष बताकर दलित समाज में जागृती और विजय की आशा पल्लवीत करने का काम रत्नकुमार सांभारीया का साहित्य करता है। संघर्षरत जीवन को एक नया आयाम देकर साहित्य में दलित स्त्री और पुरूषों का जीवन दर्शन कराते है। अपनी व्यस्त जीवन शैली होते हुये भी अपने साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य की सेवा की है।

प्रस्तावना: रत्नकुमार सांभारीया जी ने लगबग २५० कहानीयॉ लिखी है। कहानीसंग्रह — हुकूम की दुग्गी, काल तथा अन्य कहानीयॉ, खेत तथा अन्य कहानीयॉ, दलित समाज की कहानियॉ, एयरगन का घोडा आदी महत्वपुर्ण है। उनका एकांकी संग्रह — समाज की नाक और नाटक — विमा, उजास, भभुल्या आदी। लघुकथा संग्रह— बॉग और अन्य लघुकथाऍ, प्रतिनिधी लघुकथा शतक। आलोचना— मुंशीप्रेमचंद और दलित समाज, अनुवाद डॉ. आंबेडकर : एक प्रेरक जीवन का अरबी सिंधी में अनुवाद डॉ. आंबेडकर के जीवन पर अरबी, सिंधी लिपी में विश्व की पहली पुस्तक कहानीयों, लघुकथाओं और नाटको का अंग्रेजी, मराठी, पंजाबी, सिंधी, गुजराती उडीया, सहीत अन्य भाषाओं में अनुवाद। —''Thunderseorm dalip stories '' U. K. Landan की कंपनी 'हाताचे इंडिया' द्वारा प्रकाशित। जयपूर लिटरेचर फस्टिव्हल २०१६ में लोकार्पण एवं चर्चा। विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठयक्रम में कहानीयॉ एवं नाटक समीलित, नाटको का मंचन आदी। देश की आदिकांश स्थापीत पत्रिकाओ में कहानीयॉ, लघु कथाऍ और समिक्षाऍ प्रकाशीत। 'मै जीती' कहानी पर टेलिफिल्म बनी है।

सम्मान— नवज्योती कथा सम्मान। सहारा समय कथा चयन प्रतियोगिता २००६ मे पुरस्कृत 'चपडासन' कहानी के लिए उपराष्ट्रपती द्वारा सम्मानीत कथादेश अखिल भारतीय हिंदी कहानी प्रतियोगिता २००७ का प्रथम पुरस्कार 'बीपर सुदूर एक किने ' कहानी पर राज्यस्थान पत्रिका सृजनात्मक पुरस्कार २००७ 'खेत' कहानी पर। हरियाना साहित्य अकादमी द्वारा हरियाना गौरव सम्मान २०१७ — राजस्थान सूचना

एवं जनसंपर्क सेवा से सेवानिवृत्त उपनिदेशक (प्रशासन) ऐसे विभिन्न पैलुओं के धनी रत्नकुमार सांभारीया जी है।

स्त्री के प्रति दृष्टिकोन :— रत्नकुमार साभारिया का नाटक 'विमा' जिसे नाटकार सवर्ण समाज की नारी और दलित समाज का पुरूष का प्रेम विवाह समाज के ठेकेदार सफल नही होने देने का प्रयास करते है। लेकिन अंत में पती—पत्नी एक हो जाते है। इस नाटक की नायीका विमा नेत्रहीन है। विमा यह स्त्री गाव के जमीनदार की बेटी जो नेत्रहीन है। विमा का परिवार बडा है। नेत्रहीन होने के कारण परिवार में उसका कोई अस्तित्व नही था। विमा घर के झाडू—पोछा कर के बर्तन मांझने का काम करती रहती है। भाई की बिबीयॉ उसे कोई सम्मान नही देती बल्की उस पर अत्याचार ही करते थे। विमा इनके अत्याचारों से परेशान थी। एक दिन विमा धाडस बनाकर घर से बाहर निकलती लेकीन कहॉ जाना उसे पता नही था और नेत्रहीन होने कारण उसे कुछ समझ नही रहा था। रेल में बैठकर वह शहर आती। अनजान शहर में अकेली स्त्री देखकर कुछ गुंडे मवाली लोग उसे बहला फुसलाकर रेल्वे स्टेशन से बाहर ले जाने की कोशिश करते और उसपर अत्याचार करना चाहते। यह विमा भॉप लेती और बचने के लिए आवाज देने लगती उसी समय नेत्रहीन जमन वहॉ पहुंचकर विमा को बचाते हुए अपने साथ नेत्रहीन संस्था अध्यक्ष शामजी के यहॉ विमा को लेकर आता है । जमन उसे मैं भी नेत्रहीन होने का भरोसा दिलाता है। शामजी उन दोन्हो का विवाह करवा देते है। कुछ दिन बाद विमा का पत्ता घरवालों को लग जाता है। विमा के भाई शामाजी के रिश्तेदार होने से शामाजी विमा को उसके भाई के हात सौफ देता और जमन को वहॉ से बाहर कर देता है। जमन दलित और विमा जमीनदार संवर्ण की बेटी और शामाजी की रिश्तेदार निकलने के कारण जातिगत अहंकार के कारण शामाजी पुलीस के मदत से विमा और जमन के शादी को समाप्त करने का प्रयास करता है। लेकिन सफल नही हो जाता अंत में विमा और जमन एकसाथ रहते है । इस नाटक में नारीकी इच्छाओं का सम्मान और नारी के प्रति सहानुभूति रखते हुऐ नाटक का अंत दोन्हो ¼irh&iRuh+++½ ds feyu ls gksrk gS। विमा नारी पात्र के माध्यम से नारी अपने जीवन का निणर्य स्वयं ले सकती है यह बताने का प्रयास किया है। साथ ही नारी अपने मन से किसी पुरूष को पती स्विकारती है तो वह जीवन के अंत तक उसे अपना मानती यह संदेश नाटक के माध्यम से रत्नकुमार सांभारीयाजी देते है। नारी के भावनाओं का आदर करता हुआ नाटकार दिखाई देता है। जैसे उसपर अत्याचार कुछ गुंडे करते उसी समय जमन को भेजकर नारी की पवित्रता को बचाते हुए और जमनद्वार विमा को सम्मान देना यही बताता है। रत्नकुमार सांभारीयॉ जी 'विमा' नाटक तथा उनके साहित्य रचना में नारी प्रती प्रेमभाव, सम्मान और चारित्र के साथ सहानुभूती दर्शाता है। सांभारीयाजी ने नारी के जीवन में संघर्षपुर्ण संवेदना विमा स्त्री पात्र के माध्यम से बताते है। विमा का प्रेम कभी किसी भेद, उच्च—निच, अमीरी—गरीबी, जातीप्रथा, अस्पृश—स्पृश को नही मानकर सिर्फ प्रेमभाव मानवता और एक दुसरे के प्रति सम्मान की भावना से देखना जानता है। भारतीय संस्कृति का यथार्थ दर्शन विमा नारी के माध्यम से दिखाया गया है।

निष्कर्ष : साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से अपनी अमुर्त इच्छा अपेक्षा और भावना, संवेदना प्रगट करता है। साहित्यकृति तथा रचना साहित्यकार का अविष्कार होता जिसमें अपने अंतस्थ भावनाओं का रूप साहित्य रचना माना जा सकता है। इसी आधारपर देखे तो हमे रत्नकुमार सांभारिया के व्यक्तित्व के साथ नारी के प्रति उनका दृष्टिकोन सम्मान, प्रेमभाव, सहानुभूति के साथ नारी का वास्तविक जीवन दर्शन जो भारतीय नारी के परिपेक्ष में दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ तथा अध्ययनग्रंथ :

१) विमा (नाटक) — रत्नकुमार सांभारिया

२) हुकूम की दुग्गी — (कहानी) — रत्नकुमार सांभारिया

३) खेत — (कहानी) — रत्नकुमार सांभारिया

४) ऐयरगन का घोडा — (कहानी) — रत्नकुमार सांभारिया

५) काल तथा अन्य कहानी — रत्नकुमार सांभारिया